डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय

अवध अभिव्यक्ति

विश्वविद्यालय की ई–मासिक पत्रिका

15, अप्रैल 2021
वर्षः 04, अंक–06

आर्थिक समानता के लिए आजीवन संघर्षरत रहे डॉ0 लोहिया : कुलपति 03
छात्रों में नैतिक गुणों का विकास होना जरूरी : प्रो0 मिश्र 04

डॉ0 आम्बेडकर के आर्थिक विचार आज भी प्रासंगिक हैं : कुलपति

14 अप्रैल। डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के आम्बेडकर चेयर तथा अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण विकास विभाग के संयुक्त तत्वावधान में डॉ0 भीमराव आम्बेडकर की 130वीं जयंती के अवसर पर ''वर्तमान परिदृश्य में डॉ0 भीमराव आम्बेडकर के आर्थिक विचारों की प्रासंगिकता'' विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि डॉ0 भीमराव आम्बेडकर के आर्थिक विचार आज भी प्रासंगिक हैं। डॉ0 आम्बेडकर बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे और वे जीवन पर्यन्त विपन्नों के लिए संघर्ष करते रहे। डॉ0 अम्बेडकर का मूल उद्देश्य सर्वसमाज का भेद–भाव रहित विकास करना रहा। आज उनके विचारों को आत्मसात करते हुए विपन्नों को विकास की मुख्यधारा में जोडने और समरसता आधारित समाज की स्थापना करने की जरूरत है। यह ही मानवता की सच्ची सेवा होगी जो कि डॉ0 भीमराव आम्बेडकर का सपना था।

संगोष्ठी के मुख्य अतिथि जे0एन0यू0, जयपुर के पूर्व कुलपति प्रो0 एम0एम0गोयल ने बताया कि राजकोषीय संकट से अर्थव्यवस्था को बचाने के लिए आम्बेडकर द्वारा प्रतिपादित किए गए सार्वजनिक व्यय के सिद्धांत को अपनाना चाहिए। डॉ० आम्बेडकर के अनुसार संसाधनों का खर्च सुनिश्चित करना चाहिए साथ ही निष्पादन में विश्वास, बुद्धि और मितव्ययिता रखनी चाहिए। प्रो0 गोयल ने कहा कि प्रतिस्पर्धात्मक मांगों के बीच सार्वजनिक व्यय

का आवंटन और उपयोग का तरीका आम्बेडकर के सिद्धांत के परिधि के भीतर आता है जिसे सार्वजनिक खर्च के स्पर्श–पत्थर के रूप में देखा जा सकता है। प्रो0 गोयल ने बताया कि डॉ० बी0 आर0 आम्बेडकर एक पेशेवर अर्थशास्त्री थे। उन्होंने सरकार को विभिन्न ज्ञापन सौंपे जो उनके अर्थशास्त्र के विशद ज्ञान के अनूठे पहलू को बताते हैं। प्रो. गोयल ने कहा कि सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक स्थितियों में सुधार के लिए भारतीय संविधान में विभिन्न सुरक्षा उपायों को शामिल करके आम्बेडकर मानव संसाधन विकास के जनक साबित हुए। प्रो0 गोयल ने बताया कि भगवद् गीता में बौद्ध सिद्धांतों के बारे में उनकी बौद्धिक स्वीकृति हर जगह परिलक्षित होती है ।

विशिष्ट अतिथि सन्त गहिरा गुरू सरगुजा विश्वविद्यालय, के पूर्व कुलपति प्रो0 रोहिणी प्रसाद ने बताया कि डॉ० आम्बेडकर कृषि उद्योग एवं अन्य वित्तीय संसाधनों के राष्ट्रीयकरण के पक्षधर थे, उनके अनुसार जब इन संसाधनों पर सरकारी नियंत्रण होगा तब समाज के विपन्न लोगों की आर्थिक शोषण की संभावना कम होगी । विशिष्ट अतिथि एवम् वक्ता के रुप में आर्थिक अध्ययन एवं नियोजन केन्द्र जे0एन0यू0 नई दिल्ली के अध्यक्ष प्रो0 शक्ति कुमार ने डॉ० आम्बेडकर के आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक दृष्टिकोण को बहुत व्यापक तरीके से रखते हुए यह बताया कि डॉ० आम्बेडकर में राजकोषीय स्थिति सुदृढ करने के लिए रुपये की समस्या का उल्लेख करते हुए उसका बेहतर समाधान प्रस्तुत किया और यह बताया कि राजकोष का समुचित बटवारा अर्थव्यवस्था के निचले तबके के लिए होना आवश्यक है, तभी हम सम्पूर्ण समाज के विकास की बात कर सकते है।

इस अवसर पर अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण विकास विभाग के प्रो0 आशुतोष सिन्हा ने डॉ० आम्बेडकर के आर्थिक चिन्तन के विभिन्न पहलुओं का व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत किया साथ ही प्रो0 शैलेन्द्र कुमार माइक्रोबॉयोलोजी विभाग ने डॉ० आम्बेडकर के आर्थिक के अतिरिक्त सामाजिक एवं राजनैतिक बिन्दुओं का भी उल्लेख किया ।

आम्बेडकर चेयर के समन्वयक प्रो0 विनोद कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि इस एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का प्रमुख उद्देश्य लोगों को डॉ० आम्बेडकर के विभिन्न सामाजिक, आर्थिक दृष्टिकोणों से परिचित कराना रहा है। संगोष्ठी में ऑफलाइन एवं ऑनलाइन पद्धति में देश के विभिन्न विद्वान विशेषज्ञों द्वारा शोध पत्रों को प्रस्तुत किया गया। राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारम्भ डॉ० आम्बेडकर के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन व कुलगीत के साथ किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 सरिता द्विवेदी एवं धन्यवाद ज्ञापन सुश्री पल्लवी सोनी द्वारा किया गया।

महामारी से बचने के लिए टीकाकरण बहुत जरूरीः कुलपति

14 अप्रैल। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह के दिशा–निर्देशन में विश्वविद्यालय एवं सम्बद्ध महाविद्यालयों के शिक्षकों, अधिकारियों एवं छात्र–छात्राओं द्वारा 11–14 अप्रैल तक जागरूकता अभियान 'टीका उत्सव' ग्रामीण क्षेत्रों में चलाया गया। इस अभियान में विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी एवं छात्र–छात्राओं ने बढ़–चढ़ कर कोविड प्रोटोकाल के तहत हिस्सा लिया।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 सिंह ने बताया कि वर्तमान समय में कोविड–19 टीकाकरण एक सबसे महत्वपूर्ण सुरक्षा कवच है। जागरूकता अभियान वर्तमान समय की महती आवश्यकता है। सभी को भारत सरकार द्वारा बताये गये कोविड–19 से बचाव के नियमों का कड़ाई के साथ पालन करना चाहिए। महामारी से बचाव का मूलमंत्र है 'सुरक्षित रहिए, स्वस्थ रहिए'। अपने जीवन की सुरक्षा के साथ परिवार की सुरक्षा भी अति आवश्यक है। इसलिए 45 वर्ष से अधिक आयु के लोग प्राथमिक केन्द्र पर पहुंच कर टीका जरूर लगवाएं। उन्होंने कहा कि वत.र्मान समय में कोविड की दूसरी लहर चल रही है। इस महामारी से बचाव के लिए केन्द्र सरकार वृहद स्तर पर टीकाकरण जागरूकता अभियान चला रही है। इस अभियान का अधिक से अधिक फायदा उठाकर अपने को एवं अन्य को भी टीकाकरण के लिए प्रेरित करें।

कुलपति ने बताया कि इस महामारी से बचने के लिए टीकाकरण होना बहुत जरूरी है। टीकाकरण हो जाने से आप सभी संक्रमण से बच सकेंगे। कुलपति ने शिक्षकों के साथ ग्रामवासियों को मास्क वितरित किया और कहा कि संक्रमण से बचाव का एक जरिया मास्क लगाना भी है। इसके लगाने से आप संक्रमण से बच सकते है और साथ ही परिवार को भी सुरक्षित रख सकते हैं। टीका उत्सव में 45 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों को टीका लगवाने के लिए प्रेरित किया गया। इस अभियान को सफल बनाने के लिए कुलपति प्रो0 सिंह ने अभियान के दौरान प्रतिदिन सभी टीमों के साथ सम्पर्क कर मार्गदशन किया। विश्वविद्यालय के वित्त अधिकारी धनंजय सिंह एवं कुलसचिव उमानाथ ने टीका उत्सव को सफल बनाने के लिए कुलपति के निर्देश पर गांवो का निरीक्षण किया एवं टीमों का उत्साहवर्धन किया।

परिसर के गणित एवं सांख्यिकी विभाग को गंजा गांव, बायोकमेस्ट्री विभाग पूरे हुसैन, व्यवसाय एवं प्रबंध एवं उद्यमिता विभाग भीखापुर, पर्यावरण विज्ञान विभाग बिहारीपुर, माइक्रोबायोलॉजी विभाग त्रिहुरा माझा, भौतिकी एवं इलेक्ट्रानिक्स विभाग जनौरा, अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण विकास विभाग चांदपुर, प्रौढ़ सतत एवं प्रसार शिक्षा विभाग असरतपुर, विधि विभाग तकपुरा दर्शन नगर, जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग रेतिया, एम0टी0ए0 एवं एम0एड0 विभाग सरायरासी, समाजकार्य विभाग हासापुर, आई0ई0टी पासी का पुरवा, धरमपुर एवं मिल्कीपुर, एन0सी0सी0 कोरखाना, आवासीय क्रीड़ा विभाग डाभासेमर, कर्मचारी परिषद उसरू पहाड़गंज, मिर्जापुर एवं रायपुर में सघन अभियान चलाकर कोविड–19 से बचाव के लिए 45 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों को टीका के लिए प्रेरित किया। इसके साथ ही अधिकारियों, शिक्षकों, कर्मचारियों एवं छात्र–छात्राओं ने कोविड के प्रोटोकाल का पालन करते हुए मास्क बराबर लगाने एवं सेनिटाइजर का प्रयोग हमेशा करने एवं दो गज की दूरी बनाये रखने की सलाह दी। स्लोगन के माध्यम से गांव के निवासियों का ध्यान आकृष्ट किया।

दूसरे दिन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने प्रातः 09 बजे नगर के रेतिया मोहल्ला का औचक निरीक्षण किया। जनसंचार एवं पत्रकारिता द्वारा रेतिया क्षेत्र में शिक्षकों एवं छात्र–छात्राओं ने कोविड–19 से बचाव के लिए लोगों को कोविड टीकाकरण के लिए प्रेरित किया।

तीसरे दिन विश्वविद्यालय द्वारा चलाये जा रहे कोविड टीकाकरण जागरूकता अभियान का कुलपति ने निरीक्षण कर जायजा लिया। कुलपति ने सर्वप्रथम प्रातः 9 बजे परिसर के विधि विभाग द्वारा चलाये जा रहे तकपुरा दर्शननगर में ग्राम निवासियों से संवाद किया एवं इस महामारी से बचाव के लिए 45 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों को टीका लगवाने के महत्व को बताया।

कुलपति प्रो0 सिंह ने आई0ई0टी0 परिसर द्वारा पासी का पुरवा, धरमपुर एवं आवासीय क्रीड़ा विभाग तथा शारीरिक शिक्षा, खेल एवं योगिक संस्थान द्वारा डाभासेमर में चलाये जा रहे अभियान का जायजा लिया।

चौथे दिन विश्वविद्यालय के कुल.पति प्रो0 सिंह एवं अधिकारियों, शिक्षकों, कर्मचारियों एवं छात्र–छात्राओं ने जनपद के लगभग 16 चयनित गांवों में कोविड प्रोटोकाल का अनुप.लन करते हुए लोगों को टीका के लिए जागरूक किया। कुलपति प्रो0 सिंह के निर्देश पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव उमानाथ प्रातः 8:30 बजे जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग द्वारा नगर के रेतिया मोहल्ले में चलाये जा रहे टीका जागरूकता अभियान का निरीक्षण किया। निरीक्षण के समय कुलसचिव ने शिक्षकों एवं छात्रों की टोली के साथ घर–घर जाकर टीकाकरण के लिए प्रेरित किया। इस अभियान से काफी संख्या में लोगों ने नजदीक के केन्द्र पर पहुंचकर टीकाकरण करा लिया है।

इस अभियान को सफल बनाने में विश्वविद्यालय के अधिकारी, आचार्य, उपाचार्य, सहायक आचार्य, कर्मचारी एवं छात्र–छात्राए शामिल रहे।

आत्मरक्षा करना हम सभी का अपना अधिकार है : जसपाल

13 अप्रैल। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के वीमेन ग्रीवेंस एवं वेलफेयर सेल द्वारा प्रदेश सरकार द्वारा शुरू किए गए मिशन शक्ति अभियान के तहत "नारी सशक्तिकरण के लिए आत्मरक्षा की विधियाँ एवं उपाय" विषय पर वेबिनार आयोजन किया गया। वेबिनार को संबोधित करते हुए मुख्य वक्ता यू0 पी0 कराटे एसोशिएशन उत्तर प्रदेश के जनरल सेक्रेटरी जसपाल सिंह ने नारी सशक्तिकरण के लिए छात्राओं को आत्मरक्षा के गुर सिखाए। उन्होंने विद्यार्थियों को बताया कि किसी भी विशेष परिस्थिति में आत्मरक्षा करना हम सभी का अपना अधिकार है। इसलिए महिलाओं को शारीरिक और मानसिक तौर पर मजबूत होने की आवश्यकता है। जब आप मानसिक व शारीरिक रूप से मजबूत रहेंगी तो आप किसी भी परिस्थिति का सामना कर सकती हैं।

उन्होंने सुरक्षात्मक बिन्दुओं पर चर्चा करते हुए कहा कि बालिकाओं एवं महिलाओं को सामने आने वाले खतरों की पहचान करना बहुत जरूरी है। इसकी जानकारी होने से आप निर्भीक होकर कार्य कर सकती है। विषम परिस्थितियों में सरकार द्वारा महिलाओं की सुरक्षा के लिए आपातकालीन नम्बर अपने पास रखना चााहिए। जिससे जरूरत के समय उस नम्बर का प्रयोग किया जा सके। इसके साथ ही उन्होंने अन्य बिन्दुओं पर महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही सेल की समन्वयक प्रो0 तुहिना वर्मा ने बताया कि महिलाओं एवं बालिकाओं की सुरक्षा एवं आत्मरक्षा के लिए विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह के दिशा–निर्देशन में श्रृंखलाबद्ध वेबिनार का आयोजन किया जा रहा है। इस तरह के कार्यक्रम से काफी हद तक महिलाओं को जागरूक किया जा चुका है।

कार्यक्रम में प्रो0 वर्मा द्वारा विद्यार्थियों को आत्मसुरक्षा की शपथ दिलाई गई। कार्यक्रम का संचालन सेल की सदस्य डॉ0 सरिता द्विवेदी ने किया। कार्यक्रम में कुलसचिव उमानाथ, सहसमन्वयक डॉ0 सिंधु सिंह, डॉ0 प्रतिभा त्रिपाठी, डॉ0 सरिता द्विवेदी, डॉ0 महिमा चौरसिया, मनीषा यादव सहित बड़ी संख्या में शिक्षक एवं प्रतिभागी ऑनलाइन जुड़े रहे।

मंथन

15 अप्रैल 2021: चैत्र मास, शुक्ल पक्ष, तृतीया, विक्रम संवत् 2078

'वही व्यक्ति समर्थ है जो यह मानता है कि वह समर्थ है'

भारतीय अर्थव्यवस्था पर गहराता संकट

कोविड–19 की दूसरी लहर से समूचा भारत कराह रहा है। मेडिकल सुविधाओं को लेकर प्रत्येक नागरिक के समक्ष संशय की स्थिति प्रबल होती जा रही है। साथ ही साथ इस प्रलय कारी महामारी से भारतीय अर्थव्यवस्था पर भी गहरी चोट होती दिखाई पड़ रही है। बड़े उद्यमियों से लेकर छोटे–मोटे कारोबारी और असंगठित क्षेत्र में कार्य करने वालों के समक्ष नित नई मुश्किलें बढ़ती जा रही हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था की बुनियाद भले ही कृषि क्षेत्र हो, लेकिन वर्तमान समय में भारतीय अर्थव्यवस्था में विकास के पीछे मिडिल क्लास और लोअर मिडिल क्लास का सबसे बड़ा हाथ है। यही कारण है कि भारत को एक 'मिडिल इनकम ग्रुप' की अर्थव्यवस्था के रूप में परिभाषित किया जाता है। कोविड–19 के जारी वैश्विक संकट के बीच भारतीय परिदृश्य में आर्थिक दृष्टिकोण से सबसे अधिक चर्चा दो पहलुओं पर हो रही हैं। पहला भारतीय अर्थव्यवस्था की सबसे दयनीय आबादी यानी किसान, असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले मजदूर, दैनिक मजदूरी के लिए शहरों में पलायन करने वाले मजदूर और शहरों में सड़क के किनारे छोटा–मोटा व्यापार करके आजीविका चलाने वाले लोग। दूसरा भारतीय अर्थव्यवस्था में उत्पादन करने वाले यानी वह क्षेत्र जो इस देश में पूंजी और गैर–पूंजी वस्तुओं का उत्पादन करता है सामान्य भाषा में कहें तो मैन्यूफैक्चरिंग सेक्टर या बिजनेस सेक्टर। दुनियाभर की सरकारें इन दोनों ही पहलुओं पर काम कर रही हैं। कई देशों की सरकारों ने स्थिति से निपटने के लिए बड़े राहत पैकेज का ऐलान किया है और उसी क्रम में भारत सरकार ने भी गरीबों की मदद के लिए एक बड़े पैकेज का ऐलान किया है। सरकार ने पहले चरण में जो राहत पैकेज जारी किया है वह पूरी तरीके से कमजोर और असंगठित क्षेत्र के लोगों की समस्याओं के निवारण के लिए है। कोरोना वायरस की वजह से आए आर्थिक संकट से जूझ रहे इस तबके के लिए सरकार ने 1.7 लाख करोड़ रुपये का पैकेज जारी किया है। भारत ने अभी अपने मैन्यूफैक्चरिंग सेक्टर के लिए किसी बड़े पैकेज का ऐलान नहीं किया है। ऐसी उम्मीद है कि जल्द ही निकट भविष्य में भी किसी बड़े पैकेज का ऐलान किया जा सकता है। मांग के साथ–साथ अब आपूर्ति आधारित संकट देखने जा रहे उत्पादन क्षेत्र को सुचारु रूप से दोबारा चालू करने के लिए एक बड़े आर्थिक पैकेज की जरूरत पड़ेगी। विश्व स्तर व्यापारिक प्रतिस्पर्धा का मुकाबला करने के लिए उद्यमियों को तैयार करना होगा। इसके लिए पारदर्शी आर्थिक रणनीति पर कार्य करना होगा, जिससे अर्थव्यवस्था में आवश्यक परिवर्तन के साथ गतिशीलता को भी बल मिल सके।

भारतीय संविधान के निर्माता हैं डॉ0 आम्बेडकर

डॉ0 भीमराव आम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 को मध्यप्रदेश में महू के महार जाति में हुआ था। जिसे समाज में निम्न स्थान प्राप्त था। दलितों के बच्चे पाठशाला में बैठने के लिए स्वयं ही टाट पट्टी लेकर जाते थे और कक्षा के बाहर ही बैठते थे, वे उच्च जाति के बच्चों के साथ नहीं बैठ सकते थे। बचपन में आम्बेडकर को निम्न जाति के कारण कई बार सामाजिक भेदभाव का सामना करना पड़ा। जिसका आम्बेडकर के मन–मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव पड़ा और आगे चलकर सामाजिक भेदभाव को खत्म कर नव. राष्ट्र के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया।

बाबा साहब ने अपने महान कार्यों के द्वारा भारतीयों के चेतना और जीवन पर गहरी छाप छोड़ी, उन्होंने अपने कार्यों से दुनिया को परिवर्तित व प्रभावित करने का कार्य किया। बाबा साहब ने समाज में प्रचलित कुरीतियों और दलित, पिछड़े वर्गों व महिलाओं के विरुद्ध होने वाले अत्याचार के खिलाफ आवाज उठायी और अपने विचारों के माध्यम से लोगों को सशक्त बनाया। बाबा साहब का मानना था कि 'किसी समुदाय की तरक्की को मैं उस तरक्की से मापता हूं, जो उस समुदाय की महिलाओं ने हासिल की है।'

बाबा साहब समाज के वास्तुकार के साथ एक प्रसिद्ध कानूनविद भी थे, जिन्होंने भारत के संविधान के निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसलिए संविधान निर्माता के रूप में भी बाबा साहब को याद किया जाता है, जिन्होंने भारत के उज्ज्वल भविष्य के लिए एक सपना देखा। बाबा साहब ने वंचित वर्ग व महिलाओं के कल्याण के लिए उनके पक्ष को स्पष्ट तरीके से रखा और वंचित वर्गों को अधिकार दिलाने के लिए कानून को संविधान में स्पष्ट रूप से उल्लिखित किया।

डॉ0 भीमराव आम्बेडकर भारत को अलग नजरिए से देखते थे, वह भारत का विभाजन किए जाने के खिलाफ थे। उन्होंने इस मुद्दे पर एक पुस्तक 'थॉट्स ऑफ पाकिस्तान' नाम की पुस्तक लिखी। बाबा साहब के प्रयासों के कारण ही तिरंगे में अशोक चक्र को स्थान मिल सका। बाबा साहब ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में देश को एकजुट रखने के लिए एक संगठन का निर्माण किया और देश में राष्ट्रवाद की भावना का प्रचार प्रसार किया। बाबा साहब आधुनिक समाज के निर्माता के रूप में भी याद किए जाते हैं, उनका मानना था कि औद्योगीकरण और शहरीकरण से ही भारतीय समाज में व्याप्त छुआछूत और गहरी सामाजिक असमानता में कमी आ सकती हैं। बाबा साहब प्रजातांत्रिक संसदीय प्रणाली के प्रबल समर्थक थे और उनका विश्वास था कि भारत में ऐसी शासन व्यवस्था से समस्याओं का निदान हो सकता है।

अभिषेक गुप्ता

डॉ0 आम्बेडकर ने हिंदू समाज में व्याप्त कुरीतियों के कारण बौद्ध धर्म को स्वीकार कर लिया था। बौद्ध धर्म अपनाने के पीछे उनका विचार था कि "जो धर्म जन्म से एक को श्रेष्ठ और दूसरे को नीचा माने, वह धर्म नहीं, गुलाम बनाए रखने का षड्यंत्र है।" बाबा साहब का कहना था मैं एक ऐसे धर्म को मानता हूं जो स्वतंत्रता, समानता और भाईचारा सिखाए'।

बाबा साहब ने अपना पूरा जीवन वंचित वर्गों के कल्याण के लिए समर्पित कर दिया था। आधुनिक भारत के निर्माण में बाबा साहब के बहुमूल्य योगदान के कारण उन्हें मरणोपरांत 1990 में देश का सर्वोच्च पुरस्कार भारत रत्न प्रदान किया गया।

बाबा साहब के विचार आज भी प्रासंगिक हैं और संगठित समाज के निर्माण के लिए इनके विचार को वास्तविक रूप में सभी को अपने जीवन में उतारना होगा। उनके विचारों को अपनाकर एक खुशहाल समृद्धशाली भारत का निर्माण किया जा सकता है।

पृथ्वी के लिए बड़ा संकट है प्रदूषण

भारतवर्ष में शास्त्रों, वेदों और पुराणों में पृथ्वी को मां का दर्जा दिया गया है। पृथ्वी जीवित रहने के लिए न सिर्फ स्थल, जलवायु और वातावरण देती है बल्कि हमें खाद्यान्न भी इसी से प्राप्त होता है। परंतु वर्तमान में आधुनिकीकरण के कारण कृषि हेतु उपयोग में लाए जा रहे उर्वरक एवं कीटनाशकों और कल–कारखानों से निकलने अपशिष्ट पदार्थ पृथ्वी के लिए हानिकारक सिद्ध हो रहे हैं।

विश्व पृथ्वी दिवस प्रत्येक वर्ष 22 अप्रैल को मनाया जाता है। वर्ष 2021 में पृथ्वी दिवस की थीम है 'रीस्टोर योर अर्थ' यानी अपनी धरती को पुर्नस्थापित करें। नित नवीन निवास–स्थल और द्वीप खोजे जा रहे हैं। हमारी पृथ्वी के साथ जितने नित नवीन प्रयोग व अनुसंधान हो रहे हैं, उतना ही पृथ्वी को सहेजने, संवारने और इसे सुरक्षित करने का भी दायित्व हम इंसानों का ही है। पृथ्वी का ख्याल न रखने से जो भी दुष्परिणाम उत्पन्न हुए हैं, उसे मनुष्य जाति को भी झेलना पड़ रहा है। अब तक ज्ञात पृथ्वी एक मात्र ऐसा ग्रह है जिस पर मानव का जीवन संभव है। वर्तमान में पृथ्वी के पास ग्लोबल वार्मिंग, भूक्षरण और भूप्रदूषण जैसी समस्याएं पृथ्वी के अस्तित्व के लिए संकट बनने लगी हैं। ग्लोबल वार्मिंग के कारण लगातार पृथ्वी का तापमान बढ़ता जा रहा है। यदि पृथ्वी का तापमान यूं ही बढ़ता रहा तो ग्ले. शियरों और हिमखंडों के पिघलने से समुद्र तटीय गांवों और शहरों के जलमग्न होने की आशंका भी है। हमारी पृथ्वी को पुर्नस्थापित करने के लिए हमें पृथ्वी के सामने आ रही चुनौतियों से निजात पाना होगा। वर्तमान में बढ़ता प्रदूषण पृथ्वी को एक अनजान खतरे की तरफ ले जा रहा है।

हर्षित कुशवाहा

हम मनुष्यों का यह नैतिक कर्तव्य बनता है कि हम पृथ्वी का भरपूर उपयोग करने के साथ–साथ पृथ्वी को सहेजने और संभालने हेतु भी प्रयासरत हों। पृथ्वी हमारी एक प्राकृतिक संपदा है, जिसका दोहन न करके समुचित उपयोग करना चाहिए। हम सभी को पृथ्वी की पुनर्स्थापना के लिए दृढ़ संकल्पित होना चाहिए। संयुक्त राष्ट्र संघ पहले से ही भू–परिष्करण व भूमि बचाने हेतु संकल्पित है। 2009 में संयुक्त राष्ट्र ने 22 अप्रैल को अंतर्राष्ट्रीय मातृ दिवस के रूप में नामित किया। हम सभी को अंतर्राष्ट्रीय पृथ्वी दिवस के महत्व को समझना होगा और पृथ्वी की पुनर्स्थापना के लिए मिलकर प्रयास करना होगा।

भारतीय समाज में स्त्री शिक्षा के उन्नायक हैं ज्योतिबा फुले

महात्मा ज्योतिबा फुले प्रख्यात समाज सुधारक एवं दार्शनिक थे। उनका जन्म 11 अप्रैल 1827 को पुणे में हुआ था। इनका परिवार कई पीढ़ी से माली का काम करता था। वे सतारा से पुणे, फूल लाकर माला बनाते थे, इसलिए इनकी पीढ़ी फुले नाम से जानी जाती है। उनकी माता का नाम चिमणाबाई व पिता का नाम गोविंद. राव था। ज्योतिबा फुले ने अपनी आरंभिक शिक्षा मराठी में ग्रहण की। इनका विवाह 1840 में सावित्रीबाई से हुआ जो भारतीय इतिहास में एक समाज सुधारक के रूप में जानी जाती हैं। ज्योतिबा फुले भी महिलाओं और दलितों के उत्थान के लिए अनेक कार्य किए।

महात्मा फुले समाजसेवी होने के साथ–साथ देश के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन्होंने महाराष्ट्र में सत्यशोधक समाज नामक संस्था का गठन किया। वे भारतीय समाज में प्रचलित छुआछूत और जात–पात के भेदभाव के विरुद्ध थे। इनका मूल उद्देश्य स्त्रियों को शिक्षा और अधिकार देना था जिसमें इनकी पत्नी सावित्रीबाई फुले ने भी इनका सहयोग किया। फुले समाज में व्याप्त कुप्रथा, अंध श्रद्धा से समाज को मुक्त कराना चाहते थे।

ज्योतिबा फुले महिलाओं को स्त्री–पुरुष के भेदभाव से बचाना

चाहते थे। उन्होंने कन्याओं के लिए भारत देश की पहली पाठशाला पुणे में बनाई। स्त्रियों की शिक्षा के लिए उन्होंने 1848 में एक स्कूल खोला। लड़कियों को पढ़ाने के लिए अध्यापिका नहीं मिली तो उन्होंने कुछ दिन स्वयं यह कार्य किया और अपनी पत्नी सावित्रीबाई फुले को इस योग्य बना दिया कि वो स्त्रियों को शिक्षित कर सकें। कुछ लोगों ने उनके मार्ग में अनेक बाधा डालने की चेष्टा की परंतु फुले इससे पीछे नहीं हटे, हां कुछ समय तक काम रोकने के पश्चात उन्होंने बालिकाओं के लिए तीन स्कूल खोल दिए। निर्धन और निर्बल वर्ग को न्याय दिलाने के लिए ही ज्योतिबा ने सत्यशोधक समाज की स्थापना की। उनकी समाजसेवा देखकर 1888 में मुंबई की एक विशाल सभा में उन्हें महात्मा की उपाधि दी गई। ज्योतिबा फुले ने ब्राह्मण पुरोहित के बिना ही विवाह संस्कार आरंभ कराया और इसकी मान्यता मुंबई उच्च न्यायालय से मिली। अपने जीवन काल में उन्होंने अनेक पुस्तकें भी लिखी जैसे गुलामगिरी, तृतीय रत्न, छत्रपति शिवाजी, किसान का कोड़ा, अछूतों की कैफियत आदि।

राधा गोस्वामी

महात्मा फुले व उनके संगठन के संघर्ष के कारण सरकार ने कृषि कानून पास किया। ब्रिटिश सरकार द्वारा 1883 में स्त्रियों को शिक्षा प्रदान कराने के महान कार्य के लिए उन्हें तत्कालीन ब्रिटिश भारत सरकार द्वारा स्त्री शिक्षण के आद्यजनक की उपाधि से गौरवान्वित किया गया। महिलाओं की शिक्षा उन्हीं की देन है, जिसकी वजह से महिलाएं शिक्षित हो सकी हैं।

जन–अभिव्यक्ति

अवध अभिव्यक्ति, ई–मासिक पत्रिका विश्वविद्यालय में हो रही गतिविधियों को प्रस्तुत करती है। इसमें प्रकाशित सूचनाएं, विचार, लेख, कार्टून सभी आकर्षक व पठनीय होते हैं।

– दिनकर मिश्रा

सुविचार

सोचो वही, जो बोला जा सके, बोलो वही, जिसके नीचे हस्ताक्षर कर सको।

– शेक्सपियर

आप सुधी पाठकों के विचार सादर आमंत्रित हैं।

avadhabhivyakti@gmail.com

प्रमुख संरक्षक
प्रो0 रवि शंकर सिंह
संरक्षक
डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी, समन्वयक
प्रकाशक
श्री उमानाथ, कुलसचिव
सम्पादक मण्डल
डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा
डॉ0 अनिल कुमार विश्वा
डॉ0 राज नारायण पाण्डेय
संकलन एवं सम्पादन
अभिषेक, शशांक, शरद

Feedback

avadhabhivyakti@gmail.com

डिस्क्लेमर : ई–पत्रिका का प्रकाशन पूरी तरह से शैक्षणिक विकास को समर्पित है, इसका कोई भी व्यावसायिक हित नहीं है। सर्वाधिकार @ डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या।

आर्थिक समानता के लिए आजीवन संघर्षरत रहे डॉ0 लोहिया: कुलपति

23 मार्च। अवध विश्वविद्यालय के डॉ0 राममनोहर लोहिया आर्थिक नीति एवं विकास अध्ययन केन्द्र तथा अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण विकास विभाग के संयुक्त तत्वावधान में डॉ0 राममनोहर लोहिया की 111वीं जयन्ती के अवसर पर 'आर्थिक समानता एवं डॉ0 लोहिया के विचार' विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि डॉ0 लोहिया जीवनपर्यन्त गरीबों के आर्थिक उत्थान एवं उनका जीवन स्तर ऊपर उठाने के लिए निरन्तर संघर्ष करते रहे। ऐसे प्रखर राष्ट्रवादी आर्थिक चिन्तक की 111वीं जयन्ती मनाना हम सभी के लिए गौरव की बात है। डॉ0 लोहिया की सोच एवं दृष्टिकोण को अपने जीवन में अपनाना निश्चित रूप से विकासवादी प्रवृत्ति को बढ़ावा देगा। कुलपति ने बताया कि अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण विकास के अन्तर्गत स्थापित लोहिया चेयर निश्चित रूप से डॉ0 लोहिया के आर्थिक सामाजिक एवं राजनैतिक दृष्टिकोणों को शोध के माध्यम से जन–जन तक पहुंचाने का कार्य करेगी। शोध केन्द्र में लोहिया के विचारों से संबंधित पुस्तकों का वृहद संकलन एवं संग्रहण किया जाएगा। विश्वविद्यालय में स्थापित अन्य शोध–पीठों को विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा हर स्तर पर सहयोग प्रदान किया जाएगा।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रसिद्ध अर्थशास्त्री एवं डॉ0 शकुन्तला मिश्रा पुनर्वास विश्वविद्यालय के पूर्व. कला संकायाध्यक्ष प्रो0 अम्बिका प्रसाद तिवारी ने डॉ0 लोहिया के आर्थिक चिन्तन के सभी मूलभूत सिद्धान्तों को विश्लेषित करते हुए बताया कि डॉ0 लोहिया के आर्थिक समाजवाद को विकसित करने के लिए समता के

विचार पर चलना होगा। लोहिया का मानना था कि कृषि में अलाभकारी जोतों को कर मुक्त किया जाए अन्यथा आर्थिक विषमता में वृद्धि होगी। श्रमिक समाज की विपन्नता, महिलाओं को बराबरी का दर्जा तथा विपन्न वर्ग के जीवन स्तर को ऊपर उठाने के लिए लोहिया के विचार आज भी प्रासंगिक है। प्रो0 तिवारी ने कहा कि डॉ0 लोहिया के भौतिक समाज– वाद एवं नैतिक लोकवाद आधारित आर्थिक समानता के द्वारा बेरोजगारी का समाधान, आर्थिक बराबरी एवं जीवन स्तर पर उनके विचार महत्वपूर्ण है।

अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण विकास विभाग के अध्यक्ष प्रो0 विनोद कुमार श्रीवास्तव ने अपने उद्बोधन में अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण विकास विभाग के अन्तर्गत लोहिया आर्थिक केन्द्र के स्थापना से लेकर आज तक की प्रगति का विवेचन प्रस्तुत किया

कार्यक्रम का शुभारम्भ मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण एवं द्वीप प्रज्ज्वलन के साथ किया गया। अतिथियों का स्वागत विभागाध्यक्ष प्रो0 विनोद कुमार श्रीवास्तव द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 सरिता द्विवेदी ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रो0 आशुतोष सिन्हा द्वारा किया गया। इस अवसर पर प्रो0 मृदुला मिश्रा, डॉ0 प्रिया कुमारी, डॉ0 अलका श्रीवास्तव, डॉ0 के0 के0 मिश्रा, डॉ0 दिनेश कुमार, ओ0पी0 सिंह, रीमा सिंह, सरिता सिंह, कविता एवं विजय शुक्ला, शिवशंकर, हीरा यादव, आलोक कुमार एवं बड़ी संख्या में छात्र–छात्राएं उपस्थित रहीं।

नैक मूल्यांकन में विश्वविद्यालय को मिला बी–ग्रेड

16 अप्रैल। डा0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नैक) द्वारा बी ग्रेड प्रदान किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने विश्वविद्यालय को नैक ग्रेडिंग प्राप्त होने पर खुशी जाहिर करते हुए कहा कि यह समग्र विश्वविद्यालय परिवार का सांगठनिक प्रयास है। सभी शिक्षक कर्मचारी शोधार्थी एवं विद्यार्थी इस उपलब्धि के लिए बधाई के पात्र हैं। विगत कई माह से सभी ने सामूहिक प्रयास करके इस लक्ष्य को प्राप्त किया है। प्रो0 सिंह ने कहा कि नैक से ग्रेडिंग के बाद विश्वविद्यालय की पहचान वैश्विक स्तर पर होगी। नैक की ग्रेडिंग नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में आवश्यक है। उच्च गुणवत्ता के मूल्यांकन से विश्वविद्यालय में देश विदेश से अध्ययन एवं अनुसंधान के लिये विद्यार्थियों का जमावड़ा होगा। नैक मूल्यांकन से विद्यार्थियों को अकादमिक उन्नयन के लिए अनेकानेक अवसर मिलेंगे। साथ ही राष्ट्रीय एवं राजकीय स्तर पर संस्थागत अनुदान भी प्राप्त होंगे। ग्रेडिंग से विश्वविद्यालय परिसर में मानव संसाधन विकास केंद्र एच0आर0डी0सी0 की स्थापना शीघ्र हो जाएगी। एच0आर0डी0सी0 की स्थापना से शिक्षकों को भी अध्ययन अध्यापन के परिमार्जन एवं परिवर्धन का अवसर प्राप्त होगा।

विश्वविद्यालय के नैक सेल के समन्वयक प्रो0 फारूख जमाल ने नैक ग्रेडिंग की उपलब्धि का संपूर्ण श्रेय माननीय कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह की दूरदर्शिता एवं मार्गदर्शन को दिया है। माननीय कुलपति के निर्देशन में गठित कोर कमेटी ने अपने अथक प्रयास से इस लक्ष्य को प्राप्त किया। प्रो0 फारूख जमाल ने बताया कि नैक द्वारा वर्ष 2017 में संशोधित प्रत्यायन नियमों को अति उच्चीकृत कर दिया गया था। इन उच्च मानकों पर सफलतापूर्वक खरा उतर कर विश्वविद्यालय ने यह लक्ष्य प्राप्त किया है। प्रो0 फारूख जमाल ने नैक मूल्यांकन के लिये पहली बार विश्वविद्यालय द्वारा 03 अक्टूबर 2019 को शैक्षणिक गुणवत्ता मूल्यांकन के लिये संस्थागत सूचना, नैक को प्रेषित किया गया। नैक द्वारा इसका अनुमोदन 15 अक्टूबर 2019 को किया गया। तदोपरान्त सेल्फ स्टडी रिपोर्ट (एस0एस0आर0) 27 नवंबर 2019 को विश्वविद्यालय द्वारा प्रेषित की गयी जिसका अनुमोदन 23 जनवरी 2020 को नैक द्वारा किया गया। भौतिक सत्यापन एवं मूल्यांकन के लिये नैक टीम का आगमन अप्रैल 2020 में होना था लेकिन कोविड–19 महामारी के कारण इस कार्यक्रम को कई बार स्थगित करना पडा। इसी वर्ष 2021 के मार्च माह के प्रथम सप्ताह में सत्यापन एवं मूल्यांकन के लिये नैक टीम का आगमन हुआ। टीम द्वारा 04 मार्च से 06 मार्च तक विश्वविद्यालय के प्रशासनिक एवं शैक्षणिक संसाधनों की गुणवत्ता की सघन जांच भौतिक रूप से निर्धारित मानकों पर की गयी। इस उपलब्धि पर विश्वविद्यालय के समस्त शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थियों ने हर्ष व्यक्त किया।

कोविड–19 के बढ़ते संक्रमण के कारण कुलपति ने की आपात बैठक

14 अप्रैल। अवध विश्वविद्यालय के संत कबीर सभागार में कोविड–19 के बढ़ते संक्रमण के दृष्टिगत विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह की अध्यक्षता में एक आपात बैठक आहूत की गई। कुलपति ने अधिष्ठाता छात्र कल्याण, संकायाध्यक्ष, कुलानुशासक, विभागाध्यक्षों, निदेशकों, समन्वयकों, छात्रावासों के वार्डन एवं अधीक्षक, उपकुलसचिव, सहायक कुलसचिव, चिकित्साधिकारी (एलोपैथी व होम्योपैथी) के साथ विश्वविद्यालय के शैक्षणिक तथा प्रशासनिक गतिविधियों को संचालित किए जाने पर विचार–विमर्श किया।

बैठक में कुलपति प्रो0 सिंह ने बताया कि कोविड–19 के तेजी के साथ बढ़ रहे संक्रमण को ध्यान में रखते हुए 16 अप्रैल, 2021 से 02 मई, 2021 तक विश्वविद्यालय परिसर में समस्त शैक्षणिक कार्य भौतिक रूप से बन्द रहेंगे। इस अवधि में सिर्फ ऑनलाइन माध्यम से ही पठन–पाठन का कार्य संचालित किया जायेगा। किसी भी शिक्षक एवं अधिकारी को बिना अनुमति के मुख्यालय से बाहर जाने की अनुमति प्रदान नहीं होगी। अपरिहार्य परिस्थितियों में अनुमति प्राप्त करने उपरांत ही मुख्यालय छोड़ सकेंगे।

बैठक को संबोधित करते हुए कुलपति ने कहा कि विश्वविद्यालय के समस्त अधिकारी इस अवधि में कार्यालय में उपस्थित रहेंगे तथा अपने कार्यालय के कार्यों को कोरोना प्रोटोकॉल का अनुपालन करते हुए सुनिश्चित करेंगे। बैठक में कुलपति प्रो0 सिंह ने विश्वविद्यालय के हॉस्टल में रह रहे सभी छात्र–छात्राओं को अगले 48 घण्टों के भीतर सुरक्षित अपने घरों को पहुंचने का निर्देश दिया।

बैठक में कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय से सम्बद्ध सभी महाविद्यालय के प्राचार्य अपने शिक्षकों, कर्मचारियों एवं छात्र–छात्राओं के साथ–साथ शैक्षणिक क्रिया कलापों के सम्बन्ध में उपरोक्त दिशा निर्देशों का पालन करेंगे और इस सन्दर्भ में अपने सम्बन्धित जिले के जिलाधिकारी को सूचित कर गाइडलाइन का अनुपालन करेंगे। कुलपति प्रो0 सिंह ने बताया कि इस अवधि में आवश्यक सेवायें जैसे विश्वविद्यालय प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, विद्युत आपूर्ति, सुरक्षा व्यवस्था, स्वच्छकर्मी एवं माली कोविड प्रोटोकॉल का पालन करते हुए परिसर में उपस्थित रहेंगे।

पुंसवन संस्कार भारत की प्राचीन परम्पराओं में से एक है : माधुरी

23 मार्च। अवध विश्वविद्यालय के शारीरिक शिक्षा, खेल एवं योगिक विज्ञान संस्थान में गर्भ संस्कार त्रैमासिक प्रमाण–पत्र पाठ्यक्रम के तहत पुंसवन संस्कार, गर्भ पूजन संस्कार एवं गर्भोत्सव संस्कार विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन परिसर के ध्यान केन्द्र में किया गया। कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में अधिष्ठाता–छात्र कल्याण प्रो0 नीलम पाठक ने कहा कि पुंसवन संस्कार का सकारात्मक प्रभाव शिशु के जीवन पर पड़ता है। यह संस्कार जीवन की आधार शिला के रूप में व्यक्तित्व निर्माण में सहायक होता है। यह संस्कार पूर्णतः वैज्ञानिक है क्योंकि तीसरे माह से शिशु के अस्तित्व में आने की सुनिश्चिता को स्वीकार कर लिया जाता है।कार्यक्रम में मुख्य वक्ता गायत्री परिवार की सक्रिय कार्यकर्ता माधुरी तिवारी ने कहा कि पुंसवन संस्कार भारत की प्राचीन परम्पराओं में से एक है। इस संस्कार से गर्भस्थ शिशु में चेतना स्थापित करने के लिए वैदिक मंत्रों के साथ आचार विचार, खान–पान जैसे प्रमुख दिनचर्या में संतुलन स्थापित कर संस्कारित किया जाता है। श्रेष्ठ भारतीय ग्रन्थों, साहित्य, संगीत, चलचित्र की सहायता से शिशु का सम्यक व्यक्तित्व निर्मित हो सके, पुंसवन संस्कार का यही उद्देश्य है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे संस्थान के निदेशक प्रो0 संत शरण मिश्र ने बताया कि मनुष्य के जीवन में तीन प्रकार के ऋण होते हैं जिन्हें प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन काल में चुकाना अनिवार्य होता है।

कार्यक्रम का संचालन गायत्री वर्मा व धन्यवाद ज्ञापन अनुराग सोनी ने किया। कार्यक्रम में संस्थान की छात्र–छात्राएं एवं शिक्षक उपस्थित रहे।

शिक्षा विषय के अभ्यर्थियों का पी–एच0डी0 प्रवेश साक्षात्कार सकुशल सम्पन्न

26 मार्च। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह के निर्देश पर पी–एच0डी0 सामान्य प्रवेश परीक्षा (सीईटी 2020) शिक्षा विषय के अर्ह अभ्यर्थियों का साक्षात्कार 24 मार्च से 26 मार्च, 2021 को विश्वविद्यालय परिसर में हुआ। एम0एड0 अर्हताधारी अभ्यर्थियों का पीएचडी प्रवेश साक्षात्कार 24 से 26 मार्च, 2021 को एवं एम0ए0 शिक्षा शास्त्र के अर्हताधारी अभ्यर्थियों का साक्षात्कार 25 व 26 मार्च, 2021 को सकुशल सम्पन्न कराया गया। साक्षात्कार के लिए अभ्यर्थियों को प्रातः 10:00 बजे परिसर में कोविड–19 के प्रोटोकाल का पालन करते हुए निर्धारित स्थल पर अपने सभी आवश्यक प्रमाण–पत्रो के साथ उपस्थित होने को कहा गया था।

पी–एच0डी0 प्रवेश समन्वयक प्रो0 शैलेन्द्र कुमार वर्मा ने बताया कि पी–एच0डी0 प्रवेश के लिए सूक्ष्म जीव विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, उर्दू, जैव रसायन, दर्शनशास्त्र, व्यवसाय प्रबंध एवं उद्यमिता, भौतिक विज्ञान, मनोविज्ञान, अंग्रेजी, गणित एवं सांख्यिकी, रसायन विज्ञान, सैन्य विज्ञान, अर्थशास्त्र, जंतु विज्ञान, गणित, फिजिक्स एंड इलेक्ट्रॉनिक्स, संस्कृत, वनस्पति विज्ञान, इलेक्ट्रॉनिक्स, राजनीति शास्त्र, समाजशास्त्र, वाणिज्य, प्राचीन इतिहास, मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास, भूगोल एवं हिन्दी विषय के अर्ह अभ्यर्थियों का साक्षात्कार पहले ही सम्पन्न हो चुका है।

पी–एच0डी0 प्रवेश साक्षात्कार को सम्पन्न कराने में प्रवेश समिति के सदस्य डॉ0 नरेश चौधरी, डॉ0 गीतिका श्रीवास्तव, डॉ0 नीलम यादव, डॉ0 अभिषेक सिंह, डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा, डॉ0 आशुतोष सिंह, प्रोग्रामर रवि मालवीय, मनोज श्रीवास, अनुराग श्रीवास्तव एवं ओम प्रकाश चौरसिया की विशेष भूमिका रही।

सिंधी भाषा के विकास के लिए कराची हलवा आंदोलन चला था : प्रो0 टेकचंदानी

10 अप्रैल। अवध विश्वविद्यालय द्वारा संचालित और राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद् द्वारा वित्तपोषित सिंधी अध्ययन केंद्र तथा सिंधु वूमन एण्ड चाइल्ड वेलफेयर सोसाइटी के संयुक्त तत्वावधान में सिंधी भाषा दिवस के अवसर पर एक ऑनलाइन कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

मुख्य वक्ता के रूप में दिल्ली विश्वविद्यालय में सिंधी भाषा के प्रो0 टेकचंदानी ने कहा कि सिंधी साहित्यकारों, पत्रकारों, समा. जसेवियों की मांगों का तत्कालीन केन्द्र सरकार पर जब 20 वर्षों तक प्रभाव नहीं पड़ा, तो उन्होंने गांधीगिरी करते हुए कराची हलवा आंदोलन चलाया था। इस क्रम में वे संबंधितों को कराची हलवा खिलाकर मुंह मीठा कराते और संवैधानिक मान्यता दिलाने का आग्रह करते हुए अनेक तर्क रखते थे। ज्ञातव्य हो कि देश विभाजन में पंजाबी और बंगाली भाषा के आधे प्रान्त तो मिल गए, किन्तु पूरा सिंध प्रान्त पाकिस्तान में चले जाने से सिंधी भाषा निर्वासित हो गई।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने इस अवसर पर कहा कि सिंधी भाषा का अपना कोई प्रदेश न होने के कारण सम्पूर्ण समाज का उसके संरक्षण का दायित्व बनता है। उन्होंने कहा कि भारतीय भाषाओं के विकास में ही देश हित निहित है। इस क्रम में सिंधी भाषा का शिक्षण और प्रचार प्रसार के लिए विश्वविद्यालय को मिले इस अवसर का भरपूर सदुपयोग होना चाहिए।

सिंधु वूमन एण्ड चाइल्ड वेलफेयर सोसाइटी द्वारा संचालित राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद् के सर्टिफिकेट, डिप्लोमा और एडवांस डिप्लोमा करने वाले चार दर्जन से अधिक विद्यार्थियों को कुलपति ने प्रमाण पत्र प्रदान किए। सिंधी अध्ययन केंद्र के मानद निदेशक प्रो0 आर0 के0 सिंह ने केंद्र की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सिंधी के संरक्षण और संवर्धन के लिए गतिविधियों का वार्षिक कैलेण्डर तैयार कर लिया गया है, जिसे जल्द ही जारी किया जाएगा। अध्ययन केंद्र के मानद सलाहकार ज्ञापटे सरल ने सिंधी के संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित कराने के संघर्ष की व्यथा कथा पर विस्तार से प्रकाश डाला।

- मिशन शक्ति अभियान के तहत अवध विश्वविद्यालय के वीमेन ग्रीवेंस एंड वेलफेयर सेल द्वारा 05 अप्रैल, 2021 को "महिलाओं को सुरक्षा उपलब्ध करवाने में कानून और लोकमत की भूमिका" विषय पर एक वेबिनार का आयोजन किया गया।
- डॉ0 राममनोहर लोहिया के 111 वीं जयंती के अवसर पर 23 मार्च, 2021 को डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने लोहिया वाटिका स्थित लोहिया की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया।
- अवध विश्वविद्यालय में शक्ति अभियान के क्रम में 22 मार्च, 2021 को वीमेन ग्रीवेंस एवं वेलफेयर सेल द्वारा 'भारत में महिलाओं के अधिकार' विषय पर एक वेबिनार का आयोजन किया गया।
- अवध विश्वविद्यालय के वीमेन ग्रीवेंस एवं वेलफेयर सेल द्वारा मिशन शक्ति अभियान के तहत 15 मार्च, 2021 को ''मिशन शक्ति के लक्ष्यों की प्रतिपूर्ति हेतु नारी शिक्षा एक प्रबल माध्यम'' विषय पर एक वेबिनार का आयोजन किया गया।

छात्रों में नैतिक गुणों का विकास होना जरूरी : प्रो0 मिश्र

15 मार्च। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के शारीरिक शिक्षा, खेल एवं योग विज्ञान संस्थान के शारीरिक शिक्षा विभाग में बी0पी0एड0–द्वितीय सेमेस्टर के छात्र–छात्राओं के लिए सात दिवसीय शिविर का शुभारंभ संस्थान में किया गया।

शिविर के शुभारम्भ पर संस्थान के निदेशक प्रो0 एस0एस0 मिश्र ने बताया कि कुशल नेतृत्व एवं सामूहिक प्रयास से कार्य को सरलता के साथ संपन्न किया जा सकता है। कौशल विकास के अवसर को पैदा करने के लिए छात्रों में नैतिक गुणों का विकास होना जरूरी है। इस शिविर के माध्यम से छात्रों में व्यक्तित्व विकास के साथ–साथ नेतृत्व कौशल विकास के अवसर पैदा करना है। इसके न होने से उनके व्यक्तित्व का विकास नहीं हो पायेगा जो वर्तमान समय की आवश्यकता है।

प्रशिक्षण शिविर में परिसर के प्लेसमेंट सेल के सहायक निदेशक डॉ0 तरुण सिंह गंगवार ने बी. पी. एड. द्वितीय सेमेस्टर के छात्र छात्राओं को नेतृत्व कौशल विकास के गुर सिखाएं। उन्होंने छात्र–छात्राओं को बताया कि नेतृत्व क्षमता विकसित करने के लिए व्यक्तित्व विकास का होना जरूरी है। इसके न होने से स्वयं का विकास नहीं कर सकते है। खेलों में निरन्तर अभ्यास करते रहने से नेतृत्व क्षमता को बढ़ाया जा सकता है। इसके लिए 06–06 छात्रों का समूह बनाकर नेतृत्व क्षमता की पहचान कराई। उन्होंने छात्रों को बताया कि व्यक्तित्व विकास के लिए परिधानों का भी अपना महत्व है।

प्रशिक्षण शिविर में जिला विद्यालयीय क्रीड़ा समिति अयोध्या के सचिव धर्मेंद्र सिंह ने बताया कि नेतृत्व की क्षमता रखने वाले व्यक्ति को चरित्रवान एवं अनुशासन प्रिय होना चाहिए। तभी वे समाज के लिए आदर्श बन सकते है। उन्होंने बताया कि किसी भी कार्य को करने से पहले सोचने की जरूरत है। इसके उपरांत कठिन से कठिन लक्ष्य को कुशल नेतृत्व से प्राप्त किया जा सकता है। किसी भी क्षेत्र में कार्य करते समय व्यक्ति को कभी–कभी समूह का नेतृत्व करना होता है। इसी नेतृत्व क्षमता के कारण ही वह प्रगति के पथ पर अग्रसर होता है।

शिविर में डॉ0 भीमराव आम्बेडकर राज्य विद्यालय क्रीड़ा संस्थान अयोध्या के अधीक्षक नरेन्द्र पाल ने कहा कि नेतृत्वकर्ता में स्पष्टता, निडरता एवं ईमानदारी होनी चाहिए। इसके होने से समूह का नेतृत्व कर सकता है। उन्होंने छात्रों से कहा कि किसी भी कार्य की सफलता आपके परिश्रम पर निर्भर करती है। इसलिए नेतृत्वकर्ता में विषय की पर्याप्त जानकारी होनी जरूरी हैं। इसके अभाव में नेतृत्व नहीं कर पायेगा। प्रशिक्षण शिविर के संयोजक डॉ0 अर्जुन सिंह ने बताया कि इस शिविर के माध्यम से छात्रों में नेतृत्व क्षमता का विकास करना है। शिविर का शुभारम्भ मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर किया गया। संस्थान की छात्राओं द्वारा कुलगीत की प्रस्तुत की गयी। कार्यक्रम का संचालन डॉ0 अर्जुन सिंह ने किया। कार्यक्रम में डॉ0 प्रतिभा त्रिपाठी ने अतिथि एवं अन्य सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम में अतिथियों का स्वागत संस्थान के डॉ0 कपिल राणा एवं डॉ0 अनुराग पांडे द्वारा किया गया। कार्यक्रम में डॉ0 अनिल मिश्रा, डॉ0 कपिल कुमार राणा, डॉ0 त्रिलोकी यादव, डॉ0 अनुराग पांडेय, स्वाति उपाध्याय, संघर्ष सिंह, देवेंद्र कुमार वर्मा सहित प्रशिक्षण शिविर में छात्र और छात्राएं उपस्थित रही।

आत्म निर्भर भारत की प्राप्ति का लक्ष्य एक सराहनीय प्रयास : प्रो0 मित्तल

10 अप्रैल। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण विकास विभाग तथा ललित कला विभाग के संयुक्त संयोजन में "उत्तर–प्रदेश, उत्तराखण्ड आर्थिक संघ (यू0पी0यू0ई0ए0) का 16वां राष्ट्रीय अधिवेशन ''उत्तर–प्रदेश एवं उत्तराखण्ड में रोजगार के अवसर, अनौपचारिक क्षेत्र एवं श्रमिकों का बाह्य प्रवास, भारत में अनौपचारिक एवं मध्यम, लघु तथा सूक्ष्म उपक्रम : वर्तमान स्थिति एवं संभावनाएं, समग्र विकास के प्रतिमान के रूप में एकात्म मानववाद के साथ उत्तर–प्रदेश की अर्थव्यवस्था में आत्म निर्भरता का विकासात्मक परिप्रेक्ष्य" विषय पर ऑनलाइन एवं ऑफलाइन आयोजन किया गया।

राष्ट्रीय अधिवेशन की अध्यक्षता एवं उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने बताया कि वर्तमान समय में कोविड–19 की विषम परिस्थिति में उत्पन्न हुई चुनौती को हम जन सहयोग के माध्यम से लोगों को जागरूक करते हुए उन्हें विकास की धारा में पुनः जोड़ सकते हैं। हमें इस अवसर में विभिन्न बिन्दु तलाशने होंगे क्योंकि हमारे देश एवं प्रदेश में विकास की बहुत सम्भावनाएं हैं। हमें सरकारी नीतियों के सहयोग से उन्हें प्राप्त करना होगा और अपने जीवन को खुशहाल बनाना होगा।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ0 भीमराव आम्बेडकर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 ए0 के0 मित्तल ने कहा कि कोविड–19 के दौरान श्रमिकों का पलायन एक आर्थिक विभीषिका के रूप में आया जिसके कारण लोग बड़े शहरों से अपने गांवों की ओर पलायन कर गए। गांव के स्तर पर रोजगार एवं जीविकोपार्जन का साधन उपलब्ध कराने के लिए ''वोकल फॉर लोकल'' का नारा दिया गया, साथ ही इस विषम परिस्थिति में आत्म निर्भर भारत की प्राप्ति का लक्ष्य एक सराहनीय प्रयास रहा।

उद्घाटन सत्र में कॉन्फ्रेंस प्रेसीडेंट प्रो0 प्रह्लाद कुमार ने दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म दर्शन पर बल दिया। उन्होंने केन्द्र सरकार के द्वारा आत्मनिर्भर भारत को प्राप्त करने के प्रयासों पर जोर दिया। उन्होंने प्रो0 जे0 के0 मेहता की नीतियों का उल्लेख करते हुए अपने विचार रखे। यूपीयूइए के अध्यक्ष प्रो0 रवि श्रीवास्तव ने अपने उद्बोधन में एसोसिएशन के विभिन्न कीर्तिमानों का उल्लेख किया। कुमाऊं विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो0 डी0 के0 नौटियाल ने ''कोविड–19 के परिप्रेक्ष्य में आत्मनिर्भरता'' विषय पर विस्तारपूर्वक चर्चा की एवं आपदा को अवसर के रूप में बदलने पर जोर दिया। एसोसिएशन की तरफ से इस वर्ष के कौटिल्य अवार्ड से वरिष्ठ कृषि अर्थशास्त्री प्रो0 प्रेम वशिष्ठ को नवाजा गया। राष्ट्रीय अधिवेशन के संयोजक प्रो0 विनोद कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि अर्थशास्त्र के क्षेत्र में विशिष्ट शैक्षिणिक शोध योगदान देने वाले को कौटिल्य पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

तकनीकी सत्र में विशिष्ट अतिथि के रूप में सी0सी0एस0 विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 एन0 के0 तनेजा और डॉ0 राममनोहर लोहिया राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ0 सुबीर के0 भटनागर ने विषय से संबंधित अपना उद्बोधन ऑनलाइन मोड में प्रस्तुत किया। ''उत्तर–प्रदेश एवं उत्तराखण्ड में रोजगार अवसर अनौपचारिक क्षेत्र एवं श्रमिकों का बाह्य प्रवास, विषय पर आई0एस0एल0ई0, के महासचिव प्रो0 आई0 सी0 अवस्थी द्वारा अपना उद्बोधन प्रस्तुत किया गया। भारत में अनौपचारिक एवं मध्यम, लघु तथा सूक्ष्म उपक्रमः वर्तमान स्थिति एवं संभावनाएं विषय पर रिर्जव बैक ऑफ इण्डिया के डायरेक्टर डॉ0 विनीत श्रीवास्तव द्वारा ऑनलाइन मोड से अपना उद्बोधन प्रस्तुत किया गया। ''समग्र विकास के प्रतिमान के रूप में एकात्म मानववाद के साथ उत्तर–प्रदेश की अर्थव्यवस्था में आत्म निर्भरता का विकासात्मक परिप्रेक्ष्य'' पर लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रो0 आई0 डी0 गुप्ता द्वारा विषय पर अपना उद्बोधन प्रस्तुत किया गया। इस अधिवेशन में लगभग सत्तर शोध–पत्र को प्रस्तुत किया गया।

राष्ट्रीय आर्थिक अधिवेशन के दूसरे दिन समापन सत्र को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि अटल बिहारी वाजपेयी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.डी.एन. वाजपेयी ने बताया कि आज की वैश्विक मह. ामारी से निजात के लिए हमें अपनी स्वदेशी परंपराओं को अपनाते हुए पं0 दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद को अपनाना होगा। विशिष्ट अतिथि इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रो0 पी0के0 घोष ने बताया कि यदि हमें अपनी अर्थव्यवस्था को संरक्षित करना है और बदलते हुए परिवेश में विकास की गति को बढ़ानी है तो हमें वर्तमान परिदृश्य के अनुरूप सुरक्षा मानकों के साथ स्थानीय कुटीर उद्योगों को सुदृढ़ करना होगा। इसी क्रम में आई0आई0पी0ए0 के प्रो0 पी0के0 चौबे, प्रो0 प्रह्लाद कुमार तथा अवध विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. पी0के0 सिन्हा रहे।

डॉ0 शकुंतला मिश्रा विश्वविद्यालय के डॉ0 राशि सिन्हा ने अधिवेशन से संबंधित पूरी रिपोर्ट का प्रस्तुतिकरण किया। धन्यवाद ज्ञापन प्रो0 आशुतोष सिन्हा एवं लोकल आयोजन सचिव डॉ0 प्रिया कुमारी ने किया। 16वें राष्ट्रीय अधिवेशन के संयोजक प्रो0 विनोद कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि दो दिवसीय इस अधिवेशन में 9 समानांतर तकनीकी सत्रों एवं शीर्षक से संबंधित 3 विशिष्ट व्याख्यान सत्रों का आयोजन किया गया। अधिवेशन के अवसर पर 'संस्कृति समागम' पर संगीत एवं अभिनय कला विभाग द्वारा मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति की गई।

अधिवेशन का शुभारंम्भ मुख्य अतिथि एवं कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलित करके किया। सत्र का रिपोर्ट लेखन कार्य डॉ0 अलका श्रीवास्तव, डॉ0 सरिता द्विवेदी एवं सरिता सिंह द्वारा किया गया। धन्यवाद ज्ञापन स्थानीय आयोजन सचिव डॉ0 प्रिया कुमारी द्वारा किया गया।

महिलाएं सशक्त होंगी तो देश भी सशक्त होगाः प्रो0 सक्सेना

01 अप्रैल। अवध विश्वविद्यालय के वीमेन ग्रीवेंस एंड वेलफेयर सेल प्रदेश सरकार द्वारा संचालित मिशन शक्ति अभियान के तहत "विशाखा गाइड लाइन के माध्यम से महिला सशक्तीकरण को बढ़ावा" विषय पर एक वेबिनार का आयोजन हुआ।

वेबिनार को संबोधित करती हुई मुख्य वक्ता रूहेलखंड विश्वविद्यालय के डिपार्टमेंट ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन की प्रो0 तूलिका सक्सेना ने बताया कि वर्तमान समय में ज्यादातर महिलाएं घर एवं ऑफिस के कार्य से बाहर निकल रही हैं, प्रायः इन दोनों स्थलों पर शारीरिक एवं मानसिक रूप से शोषण का सामना करना पड़ता है। जिसका असर महिला. ओं के पूरे व्यक्तित्व पर पड़ रहा है। उन्होंने बताया कि महिलाएं सशक्त होंगी तो समाज व देश भी सशक्त होगा। इनके सशक्त होने से आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना साकार होगी। प्रो0 सक्सेना ने अपने वक्तव्य में कहा कि सुप्रीम कोर्ट के विशाखा गाइड लाइन ने देश की महिलाओं के सशक्तीकरण एवं सुरक्षा के लिए अग्रणी भूमिका निभाई हैं।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रही वीमेन ग्रीवेंस एंड वेलफेयर सेल की समन्वयक प्रो0 तुहिना वर्मा ने बताया कि कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह के निर्देश पर महिलाओं एवं बालिकाओं को सशक्त बनाने के लिए प्रदेश सरकार द्वारा संचालित मिशन शक्ति अभियान के तहत श्रंखलाबद्ध वेबिनार का आयोजन किया जा रहा है। जिससे महिलाओं एवं बालिकाओं को उनकी सुरक्षा के प्रति जागरूक किया जा सके। प्रो0 तुहिना ने महिलाओं एवं बालिकाओं को आत्मसुरक्षा की शपथ दिलाई। कार्यक्रम का शुभारम्भ सरस्वती वंदना एवं विश्वविद्यालय की कुलगीत की प्रस्तुति के साथ किया गया। वेबिनार का संचालन सेल की सदस्य डॉ0 प्रतिभा त्रिपाठी द्वारा किया गया ।

इस अवसर पर कुलसचिव उमानाथ, सह समन्वयक डॉ0 सिंधु सिंह, डॉ0 सरिता द्विवेदी, डॉ0 महिमा चौरसिया, मनीषा यादव, निधि अस्थाना सहित बड़ी संख्या में शिक्षक एवं प्रतिभागी ऑनलाइन जुड़े रहे।

संत कंवर कलावंत, करुणा एवं समरसता की प्रतिमूर्ति थेः सरल

13 अप्रैल। अवध विश्वविद्यालय में संचालित अमर शहीद संत कंवर राम साहिब सिंधी अध्ययन केंद्र में संत कंवर राम का 136 वां जन्म दिवस मनाया गया। अध्ययन केंद्र के निदेशक प्रो0 आर0 के0 सिंह ने उनके जीवन की एक कथा सुनाते हुए कहा कि कंवर राम ऊंच–नीच व जाति भेद में भरोसा नहीं रखते थे। एक बार एक अनुसूचित जाति का व्यक्ति संतान कामना से संत के चरणों में बताशों का प्रसाद लेकर उनके भजन में सम्मिलित होने आया। लोगों ने संत के निकट उसे फटकने तक नहीं दिया। कोलाहल सुनकर स्वयं संत उनके पास आए और उसकी मनोकामना जानकर गले लगाते हुए कहा कि यदि उनके गले लगाने से किसी को संतान का सुख प्राप्त होता है तो वह दुनिया के हर बंदे को हजार हजार बार गले लगाने को तैयार हैं। इस अवसर पर अध्ययन केंद्र के सलाहकार ज्ञाप्रटे सरल ने कहा कि कंवर उच्च कोटि के कलावंत थे। प्रसिद्ध गायक के0एल0 सहगल ने एक बार कहा था कंवर को आठवां सुर लगाने में महारत थी, जबकि आमतौर पर सुर तो सात ही होते हैं। उन्होंने कहा कि युगों–युगों में कोई विरला ही पैदा होता है जो महामानव हो। कंवर कलावंत के साथ सौमिता, करुणा, समरसता की प्रतिमूर्ति थे। इस अवसर पर कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह को अध्ययन केंद्र की ओर से एक पुस्तक भेंट की गई। निदेशक प्रो0 सिंह ने कहा कि कंवर के कृतित्व को आमजनों से परिचित कराने के लिए अध्ययन केंद्र अपनी गतिविधियां संचालित करता रहेगा। इस अवसर पर सुनीता सेंगर, अरुण सिंह, डॉ0 देवेश प्रकाश सिंह, डॉ शिवकुमार, डॉ0 अनिल सिंह, आशीष जायसवाल, अमित वर्मा, पूजा मौर्य, चादनी सिंह, रामनिवास गौड़, महेन्द्र पाल तथा अन्य विद्यार्थी उपस्थित रहे।

नैक एवं दीक्षांत समारोह की सफलता पर कुलपति ने आभार प्रकट किया

15 मार्च। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के संत कबीर सभागार में कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं कर्मचारियों को नैक मूल्यांकन एवं दीक्षांत समारोह के सफल आयोजन के लिए आभार व्यक्त किया। कुलपति ने बताया कि आप सभी के सांगठनिक सहयोग से विश्वविद्यालय ने इन महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में सफलता प्राप्त किया है। कुलपति ने विश्वविद्यालय परिवार के सभी सदस्यों को नैक मूल्यांकन, स्थापना दिवस एवं दीक्षांत समारोह में व्यापक सहयोग करने के लिए धन्यवाद दिया। कुलपति ने कहा कि विश्वविद्यालय को शैक्षिक गुणवत्ता, शोध अध्ययन के लिए निरन्तर कार्य करते रहना है, इसमें आप सभी के सहयोग की आवश्यकता है।

इस अवसर पर कुलसचिव उमानाथ, वित्त अधिकारी धनंजय सिंह, प्रो0 सी0के0 मिश्र, प्रो0 अशोक शुक्ल, प्रो0 एस0एन0 शुक्ल, प्रो0 अनुपम श्रीवास्तव, प्रो0 फारूख जमाल, प्रो0 एस0एस0 मिश्र, प्रो0 के0के0 वर्मा, प्रो0 राजीव गौड़, प्रो0 आशुतोष सिंन्हा, प्रो0 नीलम पाठक, प्रो0 शैलेन्द्र कुमार, प्रो0 शैलेन्द्र कुमार वर्मा, प्रो0 रमापति मिश्र सहित बड़ी संख्या में विश्वविद्यालय के शिक्षक एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।